

रक्षाबंधन

राखी मजबूत करती मर्यादाओं की डोर

यह त्योहार एक धार्मिक त्योहार है और यह इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक है, अर्थात् भाई और बहन के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, यह उसका बोधक है।

के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, यह उसका बोधक है।

यह ऐसे समय की याद दिलाता है, जब परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा कन्याओं-माताओं को ब्राह्मण पद पर आसीन किया, उन्हें ज्ञान का कलश दिया और उन द्वारा भाई-बहन के सम्बन्ध की पवित्रता की स्थापना का कार्य किया, जिसके फलस्वरूप

और इसके फलस्वरूप उसने अपना खोया हुआ स्वराज्य पुनः प्राप्त कर लिया था। इसी प्रकार, एक दूसरे आख्यान में यह वर्णन मिलता है कि यम ने भी अपनी बहन यमुना से रक्षाबंधन बंधवाया था और कहा था कि इस बंधन को बांधने वाले मनुष्य यमदूतों से छूट जायेंगे। स्पष्ट है कि ऐसा रक्षाबंधन जिससे कि स्वर्ग का स्वराज्य प्राप्त हो अथवा मनुष्य यम के

सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना हुई। उसी पुनीत कार्य की आज पुनरावृत्ति हो रही है। यदि ज्ञान की दृष्टि से देखा जाये तो

दण्डों से बच जाये, पवित्रता का ही बंधन हो सकता है, अन्य कोई बंधन नहीं। अब प्रश्न उठता है कि इस त्योहार से इतनी

रक्षाबंधन का त्योहार भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है। चिरातीत काल से ही बहनें भाई की कलाई पर श्रावणी पूर्णिमा को राखी बांधती चली आ रही हैं। भारत का यह त्योहार विश्व-भर में अपनी प्रकार का एक अनूठा ही त्योहार है। भाई को स्नेह के सूत्र में बांधने वाला यह एक बहुत ही मर्मस्पर्शी और भावभीति रसम है। यह त्योहार बहन और भाई के पारस्परिक स्नेह और सम्बन्ध के रूप में मनाया जाता है। इस दिन बहनें भाई को राखी बांधती हैं और उनका मुख मीठा कराती हैं। कैसी है भारत की यह अद्भुत परम्परा कि भाई अपने हृदय में अपनी बहन के प्रति स्नेह-समुद्र को बटोरे हुए सहर्ष ही इसे स्वीकार कर लेता है। 4-10 मिनट की इस रसम में भारतीय संस्कृति की वह झलक देखने को मिलती है कि किस प्रकार यहां बहन और भाई में एक मासूम उम्र से लेकर जीवन के अंत तक एक-दूसरे से प्यार का यह सम्बन्ध अटूट बना रहता है। यह धागा तो एक दिन टूट भी जाता है, परंतु मन को मिलाने वाले स्नेह के सूक्ष्म सूत्र नहीं टूटते। यदि वह तार किसी पारिवारिक तूफान के झटके से टूट भी जाता है, तो फिर अगली राखी पर फिर से नया सूत्र उस स्नेह में एक नई

जिदगी और एक नई तरंग भर देता है। इस प्रकार यह स्नेह की धारा जीवन के अंत तक ऐसे ही बहती रहती है जैसे कि गंगा, अपने उद्गम स्थान से लेकर सागर के संगम तक कहीं तीव्र और कहीं मधुर गति से प्रवाहित होती रहती है। रक्षाबंधन को केवल कायिक अथवा आर्थिक रक्षा का प्रतीक मानना इस त्योहार के महत्व को कम कर देने के बराबर है। भारत मुख्यतः एक आध्यात्मिकता प्रधान देश है। यहां मनाये जाने वाला हर त्योहार आध्यात्मिक पृष्ठ-भूमि के लिए हुए है। यदि उसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो रक्षाबंधन का भी आध्यात्मिक महत्व है।

भारत में सूत्र सदा किसी आध्यात्मिक मनोभाव को लेकर ही बांधे जाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें, सूत्र बांधने की रसम शुद्ध, धार्मिक है और हर धार्मिक कार्य को शुरू करने के समय कुछ व्रतों अथवा नियमों को ग्रहण करने के लिए यह रसम अदा की जाती है। जब भी किसी व्यक्ति से कोई संकल्प कराया जाता है तो उसे सूत्र बांधा जाता है और तिलक भी दिया

जाता है। सूत्र बांधना और संकल्प करना तथा तिलक देना- इन तीनों का सहचर्य आध्यात्मिक संकल्प का ही प्रतीक है क्योंकि यह रसम सदा किसी धार्मिक अथवा पवित्र व्यक्ति द्वारा ही कराई जाती है और सूत्र बांधवाने वाला व्यक्ति संकल्प कराने वाले को दक्षिणा भी देता है- इसी का रूपांतर यह 'रक्षाबंधन' त्योहार है। यह त्योहार एक धार्मिक त्योहार है और यह इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक है, अर्थात् भाई और बहन

रक्षाबंधन एक बहुत ही रहस्ययुक्त पर्व है। यदि इसकी पूरी जानकारी हो और ज्ञान-युक्त रीति से इस बंधन को निभाया जाये तो मनुष्य को मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। किंवदंती है कि इसको मनाने से स्वर्ग की प्राप्ति भी होती है। इसके बारे में एक जगह यह भी वर्णन आता है कि जब असुरों से हारकर इंद्र ने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था तो उसने भी इंद्राणि से यह रक्षाबंधन बंधवाया था

बड़ी प्राप्ति कैसे होती है? इसका उत्तर हमें इस त्योहार के अन्यान्य नामों से ही मिल जाता है। रक्षाबंधन को 'विष तोड़क पर्व', 'पुण्य प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है जो इसके अनन्य नाम हैं उससे यह सिद्ध होता है कि यह त्योहार पवित्रता की रक्षा करने, पुण्य करने और विषय-विकारों की आदत को तोड़ने की प्रेरणा देने वाला त्योहार है।



झुंझुनू-राज.। मंडावा विधायक रीटा चौधरी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. अमृत बहन व ब्र.कु. साक्षी बहन।



कोटा-कुन्हाड़ी(राज.)। ब्रह्माकुमारीज के शक्ति सरोवर सेवाकेंद्र में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए 'उभरते सितारे' बच्चों के समर कैम्प के साथ पर्यावरण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में सभी को पर्यावरण सुरक्षा की प्रतिज्ञा करते हुए कोटा संभाग प्रभारी ब्र.कु. उर्मिला दीदी। इस मौके पर कोटा यूनिवर्सिटी एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी नांता के डिप्टी डायरेक्टर रणवीर सिंह तथा अन्य भाई-बहनों सहित बच्चे उपस्थित रहे।



हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। तम्बाकू निषेध दिवस पर मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में आयोजित संगोष्ठी में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत ब्र.कु. बहनों की सहभागिता रही। इस मौके पर स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन ने सभी को नशे से दूर रहने का तरीका बताया व नशामुक्त बनने की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में एसीएमओ डॉ. मधुर कुमार सिंह, मानसिक स्वास्थ्य विभाग की ओर से डॉ. ललित प्रताप सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. मंजीत सिंह, डिप्टी सीएमओ डॉ. नरेश गोयल, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से साहब सिंह, पब्लिक हेल्थ ऑफिसर डॉ. खान इकबाल, डीपीएम दलवीर सिंह, मानसिक स्वास्थ्य विभाग की ओर से नीलिमा हंसदा, ब्र.कु. वंदना बहन व गजेंद्र भाई सहित सीएमओ कार्यालय के सभी स्टाफ मौजूद रहे।



मालपुरा-जयपुर राजापार्क(राज.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम के पश्चात् जेलर महावीर मीणा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सोनू बहन, ब्र.कु. मनीषा बहन और ब्र.कु. कोमल बहन।



रामगंजमंडी-राज.। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में अनेक गांव के लोग शामिल हुए। इस मौके पर ब्र.कु. शीतल बहन ने सभी को राजयोग मंडिटेशन के द्वारा प्रकृति को हरा-भरा रखने की विधि सिखाई। साथ ही सभी के द्वारा एक-एक पौधा लगाकर इस अभियान का शुभारंभ किया गया। इस दौरान गांव-गांव में जाकर ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया गया व प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम दस पौधे लगाने का संकल्प दिलाया गया।



भरतपुर-रूपवास(राज.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. परेंद्र पाराशर, आयुर्वेद चिकित्सक दिनेश शर्मा, ब्र.कु. बबीता बहन, ब्र.कु. प्रवीणा बहन तथा अन्य।